## विषय सूची


| क्रमांक | अध्याय | पेज |
|---|---|---|
| 1 | दो शब्द | 2 |
| 2 | इतिहास के स्रोत | 3 |
| 3 | आदिमानव | 6 |
| 4 | सिन्धु घाटी की सभ्यता | 16 |
| 5 | वैदिक काल | 16 |
| 6 | महाजनपद काल | 43 |
| 7 | नवीन धार्मिक विचारों का उदय | 55 |
| 8 | मौर्य वंश और राजा अशोक | 70 |
| 9 | विदेशों से व्यापार और संपर्क | 81 |
| 10 | गुप्तकाल | 89 |
| 11 | प्रांतीय राजाओं का युग | 103 |

## दो शब्द

प्रिय शिक्षक साथियों,

हम में से सभी ने अपने छात्र जीवन में इस पंक्ति को बार-बार सुना है कि -

इतिहास भूगोल बड़ी बेवफा ।

रात में याद करो,दिन में सफा ।।

इस पंक्ति का सार यह है कि इतिहास और भूगोल जैसे विषयों में इतने अधिक तथ्य होते हैं कि उसे स्मरण रखना बहुत कठिन है। बार बार पढ़ने के बाद भी कई महत्वपूर्ण तथ्यों को हम भूल जाते हैं। इसका प्रभाव परीक्षाओ में हमारे प्राप्तांकों पर पड़ता है। बहुत परिश्रम के बावजूद कम अंक पाने के कारण छात्रों की रुचि इस विषय में कम होने लगती हैं।

आरंभिक काल में ही बच्चों की इस विषय के प्रति रुचि बढ़े और वे इसे सरलता के साथ आगे भी ग्रहण कर सके, इसके लिये मैने उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली इतिहास को सरल और तुकान्त पद्यों में रुपान्तरित करने का प्रयास किया हैं। ये पद्य जहां एक ओर विषय के सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को सरल अर्थ में प्रस्तुत करते हैं, वहीं दूसरी ओर शिक्षक को भी सहायक शिक्षण सामग्री के रुप में इन्हें प्रयुक्त कर विषय को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर देते हैं।

आशा है आप सभी शिक्षक साथियों को मेरा यह प्रयास अच्छा लगेगा। इन पद्यों को पढ़ने के बाद आप अपनी प्रतिक्रियाओं से मुझे अवगत कराते रहेगें, ताकि मैं इसमें आवश्यकतानुसार सुधार कर सकूं और ज्यादा से ज्यादा बच्चे इससे लाभ प्राप्त कर इतिहास विषय को ग्रहण कर सकें।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
पूर्व माध्य.शा. टेंगनमाड़ा
विं खं.-कोटा, जिला बिलासपुर छ.ग.

## इतिहास के स्रोत

पुराने जमाने की बात,

जो होता है कुछ खास।

विषय रुप में उसे,

कहते हैं इतिहास ।।

बहुत पहले लोग,

पढ़ने लिखने में थे अनाड़ी ।

चित्र बनाकर बातें कहते,

प्रमाण हैं सिंघनपुर व कबरा पहाड़ी ।।

--००--

सिंघनपुर व कबरा के चित्र,

आदिमानव के माने जाते हैं।

पत्थरों पर बने चित्र,

शैल चित्र कहलाते हैं।।

--००--

जब मनुष्य लिखने लगा,

अपनी बात पत्थर पर खोद कर कही।

शिला,भोज,ताड़,व ताम्रपत्र,

लिखने के मुख्य स्रोत रहीं।।

--००--

उस समय की झलक,

इन लेखो में दिखती है।

प्रमुख भाषा के रुप में,

पाली या प्राकृत मिलती है।।

--००--

इन लिपियों को पढ़ना,

नही था आसान।

पढ़ने के लिये सीखना,

पड़ता था विशेष ज्ञान।।

--००--

प्राचीन बसाहटो को खोदकर,

तथ्य जिन्होने पता लगाये।

अवशेषो से जानकारी देने वाले,

इतिहासकार व पुरातत्ववेत्ता कहलाये।।

--००--

प्राचीन इतिहास जानने के,

स्रोतों की है भरमार।

प्रमुख हैं इनमें,

सिक्के,बर्तन,आभूषण व औजार।।

--००--

प्राचीन काल में,

विदेशी यात्री भी आए।

अपने यात्रा वर्णन से,

उस समय का ज्ञान कराए।।

--००--

वर्तमान, भूतकाल की

होती है परिणति।

भूतकाल से जुड़ी है,

हमारी सभ्यता और संस्कृति।।

--००--

प्रचीन काल से अब तक,

कई वर्ष हो गये व्यतीत।

आज की उन्नति में,

छिपा हैं महान अतीत।।

--००--

## आदिमानव

वर्षो पहले जंगल में रहकर,

कंद-मूल,फल खाते थे।

जानवरों का भक्षण करने वाले,

आदिमानव कहलाते थे।।

--००--

हमारे वे पूर्वज,

जो जंगल में रहे।

लोग उन्हें,

आदिमानव कहे।।

--००--

जंगल में रहकर,

कच्चा मांस खाए।

समूहों में रहकर भी,

घर नहीं बनाए।।

--००--

भोजन समाप्त होने पर,

उसी समस्या से जूझते थे।

भोजन की तलाश में,

इधर-उधर घूमते थे।।

--००--

पत्तियां ,छाल व खाल,

प्रयुक्त किये शरीर ढकने ।

शंख,सीप,हड्डी से,

बने आभूषण पहने।।

--००--

जानवरों का शिकार करने,

हथियार प्रयोग मे लाए।

पत्थर,हड्डी,सींग से,

अपने औजार बनाए।।

--००--

लोहे व पीतल की,

नही थी जानकारी।

पत्थर से बने औजार,

होते थे भारी।।

--००--

अपनी ज़रुरत के अनुसार,

पत्थरों को दिए आकार।

हथौडे,कुल्हाड़ी,वसूले,

नामक बनाए औजार ।।

--००--

औजार बनाते समय,

पत्थर आपस में टकारया ।

उत्पन्न हुई चिंगारी,

आग अस्तित्व में आया ।।

--००--

आग का उत्पन्न होना,

था एक बड़ा संयोग।

मांस भूनने व रक्षा में

आग का हुआ उपयोग।।

--००--

आज कल भी दुनिया में,

ऐसे लोग रहते हैं।

जीविकोपार्जन के लिये जो,

जंगल पर निर्भर करते है।।

--००--

औजार व हथियार में,

प्रयुक्त करते थे पत्थर ।

छत्तीसगढ़ में निवास स्थल है,

सरगुजा और बस्तर ।।

--००--

आदिमानव छोटे समूह में,

अपना जीवन बिताए।

जो भी मिला,

मिल बॉटकर खाए।।

--००--

भोजन व शिकार में,

सहयोग बना आधार ।

चीजों पर समूह का,

था समान अधिकार।।

--००--

पुरुष और महिलाएं,

साथ-साथ काम किए।

अमीरी गरीबी से दूर,

समरुप जीवन जिए।।

--००--

आदिमानव देवताओ में,

अपना विश्वास जताए।

प्रकृति के प्रतीको को,

सगे संबंधी बतलाए।।

--००--

शिकार और भोजन के लिये,

देवताओ का करते थे मान ।

समय-समय पर प्रसन्न करने,

करते थे नाच गान ।।

--००--

आदिमानव के दैव विश्वास,

गुफाओ में दिखते हैं।

सिंघनपुर,कबरा,चितवाडोंगरी में

रंग बिरंगे चित्र मिलते है।।

--००--

पशु और मनुष्य के चित्र,

आड़े तिरछे बनाए।

सीढ़ीनुमा आकृतियां,

इनकी हैं विशेषताएं।।

--००--

परिश्रम व सूझबूझ से,

पाई जो जानकारी ।

वह आज भी,

काम आती है हमारी ।।

--००--

उपयोगी चीजों की,

करके पहचान ।

खेती और पशुपालन का,

दिया हमे ज्ञान ।।

--००--

दस हजार साल पहले,

आया नया प्रभात ।

खेती और पशुपालन की,

जब हुई शुरुआत ।।

--००--

खेती और पशुपालन ने,

व्यापक प्रभाव डाला।

सबसे पहले मानव ने,

कुत्तों को पाला ।।

--००--

शिकार करने में,

कुत्तो की मदद लिया ।

बचा हुआ भोजन,

खाने को दिया ।।

--००--

इसके बाद अन्य पशु,

पालतु बनाए।

जिनमे शामिल हैं,

भेड़,बकरी और गाय ।।

--००--

आरंभ में खेती का,

जो स्वरुप सामने आया।

स्थान परिवर्तन के कारण,

स्थानान्तरण या झूम खेती कहलाया।।

--००--

जंगलो को जलाकर,

पहले साफ कर देते थे।

साल दर साल नहीं,

दो तीन साल फसल लेते थे।।

--००--

पैदावार कम होने पर,

बदल देते थे स्थान ।

उपजाउ जमीन की खोज में,

करते थे अन्यत्र प्रस्थान ।।

--००--

सधन वनों में,

आदिवासी रहते है जहॉ ।

वे आज भी,

झूम खेती करते है वहॉ ।।

--००--

खेती की शुरुआत ने,

जीवन का क्षेत्र बढ़ाया ।

मनुष्यों के जीवन में,

बड़ा परिवर्तन आया।।

--००--

पशुओ का शिकार तो,

अब भी वे करते थे।

भोजन की तलाश में,

पर अब नही भटकते थे।।

--००--

खेती के लिये,

चुने निश्चित स्थान।

रहने के लिये,

बनाए वहीं मकान ।।

--००--

खेती के कारण,

रहना हुआ जरुरी।

फसलो की रखवाली,

की साल भर पूरी।।

--००--

खेती करने वालों ने,

घास-फूस से घर बनाए।

जानवरों से बचने,

चारो ओर बाड़ लगाए ।।

--००--

अनाज रखने के लिये,

बड़े-बड़े कोठे बनवाए।

बर्तन,चूल्हा,सिबट्टा,

उपयोग मे अब लाए ।।

--००--

इस समय के लोग,

पूजा व नाच गान जानते थे।

धरती और प्रकृति को,

शक्ति का रुप मानते थे ।।

--००--

## सिन्धु घाटी की सभ्यता

## (2600 ई0पू0 से 1900 ई0पू0)

समय के साथ,

बदलता गया जीवन।

कृषि व पशुपालन से,

आया व्यापक परिवर्तन।।

--००--

उपजाउ मिट्टी और पानी,

मिलते थे नदी किनारे।

आरंभिक बसाहटें,

बनी इसलिये नदी किनारे ।।

--००--

उपजाउ मिट्टी और पानी,

उपयोगी थी खेत-खलिहान में।

पुरानी सभ्यता विकसित हुई,

सिन्धु नदी के मैदान में।।

--००--

80-85 साल पहले,

सिन्धु मैदान मे हुई खुदाई।

टीलों के नीचे दबे,

कुछ शहर सामने आये ।।

--००--

इन शहरो में,

हड़प्पा और मोहन जोदड़ो थे खास।

खुदाई से कई जगहें मिली,

सिन्धु और रावी नदी के पास।।

--००--

विव्दानों ने आस पास,

कई जगहो पर खुदाई किया।

सम्मिलित रुप से सबको।

सिन्धु सभ्यता का नाम दिया।।

--००--

सबसे पहले 1921 में,

हड़प्पा की हुई खुदाई।

इस कारण यह,

हड़प्पा संस्कृति भी कहलाई ।।

--००--

हड़प्पा और माहन जोदड़ो,

स्थित हैं पाकिस्तान में।

गुजरात में धैलावीरा,लोथल,

कालीबंगा है राजस्थान में।।

--००--

अफगानिस्तान से आलमगीरपुर तक,

सिन्धु सभ्यता का था फैलाव।

2600 से 1900 ई0पू0 तक,

रहा इसका प्रभाव।।

--००--

नगरो को बसाने में,

दिखाई अपनी परिपक्वता।

नगर नियोजन थी,

सबसे बड़ी विशेषता।।

--००--

सिन्धु वासी नगर को,

दो हिस्सो में बसाए।

मकान में आंगन के साथ,

शौचालय व स्नानघर बनवाए।।

--००--

घर की नालियॉ,
सड़क की नालियो में मिलती हैं।

सिन्धु सभ्यता की उतकृष्टता,

नगर नियोजन में दिखती है।।

--००--

आवास और परकोटा,

नगरी दो भागो में बंटी।

सड़के आपस में,

समकोण पे कटी ।।

--००--

हड़प्पा की खुदाई में,

सामने आया अन्नागार।

मोहन जोदड़ों मे मिला,

एक विशाल स्नानाघर।।

--००--

अन्नागार में,

रखे जाते थे अनाज।

स्नानघर में होता था,

सार्वजनिक व धार्मिक काम-काज।।

--००--

अन्नागार जैसे भवन,

कई स्थानों से प्राप्त हुए।

स्नानघर को भरने,

बनाए गए कई कुएं।।

--००--

शासको का एक वर्ग,

नगरो पर करता था शासन।

प्रमाणित होता है यह,

परकोटा से घिरे भवन के कारण।।

--००--

केन्द्रीय शासन के अधीन,

छोटे-छोटे प्रांतो के हैं अनुमान।

राजा के होने का,

कुछ मूर्तियां देते है प्रमाण।।

--००--

सिन्घु सभ्यता के लोग,

कृषि और पशुपालन करते थे।

इसी कारण वे,

नदी किनारे बसते थे।।

--००--

प्रमुख फसलें थी उनकी,

गेंहूं,जौ,तिल,कपास।

धातुओं में ज्ञात था उन्हें,

तॉबा,पीतल,शीशा,कांस।।

--००--

बर्तन,मूर्ति,औजार बनाने में,

कांसा व तांबा प्रयोग में लाए।

रंग-बिरंगे पत्थर के,

मनकों से माला बनाए।।

--००--

सीपों व शंखो से,

चूडियॉ भी बनाईं।

बर्तनों पर चित्रकारी कर,

कुम्हारों ने कला दिखाई।।

--००--

सिन्धु वासियों ने व्यापार को,

उन्नत स्वरुप दिया।

विदेश व्यापार का केन्द्र बना,

शहर मेसेपोटेमिया।।

--००--

विदेशी व्यापार में,

जल व थल दोनों मार्ग हुआ प्रयुक्त।

नाव से वस्तु ढ़ोने में,

लोथल था सर्वाधिक उपयुक्त।।

--००--

लोथल की गोदी,

माल ढुलाई का बना आधार।

जल-मार्ग से हुआ,

निरंतर विदेशी व्यापार।।

--००--

समुद्र व नदी का किनारा,

जहॉ जहाज खड़े रहते थे।
ऐसे स्थल को,

गोदी कहा करते हैं।।

--००--

गोदी का अस्तित्व
लोथल में सामने आया।

गोदी का विकसित रुप,
बंदरगाह कहलाया।।

--००--

निर्यातो में प्रमुख था,

आभूषण,कपास,और हाथी दांत।

सोना व रंगीन पत्थरों का,

दूसरे देशों से हुआ आयात।।

--००--

सूती एवं उनी,

कपड़ों का प्रयोग करते।

स्त्री और पुरुष,

दोनों आभूषण पहनते ।।

--००--

मिट्टी के खिलौने,

बनाए खूबसूरत।

यहॉ पाए गई,

मातृदेवी की मूरत।।

--००--

शवों को जमीन में गाड़,

करते थे अंतिम संस्कार।

पशु पूजा के प्रतीक में,

चित्र बनाए बैल कूबड़दार।।

--००--

एक मोहर पर,

पशु आकृति बनाई।

जो पशुपति या शिव का,

आरंभिक रुप कहलाई।।

--००--

पशु आकृतियों में थे,

शेर, हाथी, गेंडा, हिरण।

वृक्षों में करते थे,

पीपल का पूजन ।।

--००--

पढ़ने लिखने के लिए,

चित्र लिपि बनाई।

लिखी जाती थी जो,

बाएं से दाएं।।

--००--

सिन्धुवासियों ने,

जिस लिपी को बनाया।

दुर्भाग्य से उसे,

और कोई नही पढ़ पाया।।

--००--

धीरे-धीरे शहरी आबादी,

जाने लगी गांवो की ओर।

इससे शहरी जीवन,

होता गया कमजोर।।

--००--

छोटे-छोटे गांव,

आकार लेने लगे स्पष्ट।

समय के साथ

शहर होते गए नष्ट।।

--००--

कैसे हुआ सभ्यता का अंत,

रहस्यमय है यह बात।

विव्दान कारण बतलाते हैं,
भूकंप या बाढ़ के हालात।।

--००--

बच्चे आश्चर्य चकित हुए,

पाकर सभ्यता का ज्ञान।

चर्चा करते हुए किए,

अपने घरों को प्रस्थान।।

--००--

**<u>वैदिक काल (3500से 4000पूर्व)</u>**

हड़प्पा संस्कृति के बाद

नई संस्कृति आयी।

भारत के इतिहास में,

वह वैदिक काल कहलायी।।

--००--

सिन्धु संस्कृति के बाद

वैदिक संस्कृति का हुआ विकास।

यह संस्कृति भी पनपी,

सिन्धु और सरस्वती नदी के पास।।

--००—

प्राचीन ज्ञान का,

वैदिक साहित्य बना आधार।

संस्कृत भाषा में लिखे,

वेदो की संख्या चार ।।

--००—

चारों वेद,

श्रुति कहलाते हैं।

क्योंकि यह,

मौखिक सिखाए जाते हैं।।

--००--

शिष्यों ने वेद मंत्र

सस्वर पढ़ कर किया स्मरण।

इस तरह यह ज्ञान,

पीढ़ी-दर-पीढ़ी हुआ हस्तांतरण।।

--००--

सूना गया होता है,

श्रुति का अर्थ।

इस परम्परा ने रोका,

ज्ञान को होने से व्यर्थ।।

--००--

इस काल के लोग किये,

कृषि और पशुपालन का कार्य।

सप्त सैंधव प्रदेश के ये वासी।

कहते थे अपने को आर्य।।

--००--

अध्ययन सुविधा के लिए,

वैदिक काल के दो रुप सामने आये।

प्रथम ऋग्वैदिक काल,

दूसरा उत्तर वैदिक कहलाये।।

--००--

ऋग्वैदिक काल के लोगो का,

पशुपालन था मुख्य व्यवसाय।

खेती भी करते थे किन्तु,

मुख्य पूंजी होती थी गाय।।

--००--

वैदिक ग्रंथो में,

संस्कृत भाषा हुयी प्रयुक्त।

ऋग्वैद के मंत्रो को

कहा जाता है सूक्त।।

--००--

सूक्त का अर्थ हैं,

अच्छी तरह से बोलकर प्रस्तुति।

इन सूक्तो में की गई,

देवी - देवताओ की स्तुति।।

--००--

पशुओ को चराने,

चारागाह लेकर जाते थे।

चारा कम पड़ने पर,

नई जगह जाते थे।।

--००--

चारे की खोज में,

जगह बदली बार - बार।

चरागाह पर होता था,

सबका सामूहिक अधिकार।।

--००--

महिलाएं सूत कातकर,

कपड़ा बनाएं।

रथ बनाने वाले,

रथकार कहलाएं।।

--००--

गाय को आर्यो ने,

अपने धर्म से जोड़ा।

उनके पालतु पशु थे,

भेड़,बकरी ,कुत्ता और घोड़ा।।

--००--

आर्यो के जीवन में

गायो का था बहुत मान।

दूध,दही,घी का,

भोजन में था मुख्य स्थान।।

--००--

आर्यों ने लकड़ी एवं मिट्टी के,

घर बनाए।

धार्मिक क्रिया के रुप में,

यज्ञ कराए।।

--००--

पुरुष होता था,

परिवार का मुखिया,

परन्तु,

महिलाओ को भी सम्मान दिया।।

--००--

ऋग्वैदिक काल में महिलाएं,

भेदभाव से बची।

इसी कारण महलाओं ने,

वेद सूक्त रची।।

--००--

इस काल में परिवार था,

समाज का प्रमुख आधार।

आपस में करते थे,

सबसे मधुर व्यवहार।।

--००--

गांव के समूह,

जन कहलाते थे।

प्रमुख जनो में,

पुरु,कुरु जन आते थे।।

--००--

बहुत से लोग बने,
आर्य व अनार्य के बीच की कड़ी।

वैदिक लोग कहे जिनको,

दास,दस्यु या पाणि।।

--००--

अलग था पाणियो का

रहन सहन और आचरण।

आर्यो से मेल हुआ,

एक स्थान पर रहने के कारण।।

--००--

आर्य व पाणियो ने,

एक दूसरे की बातें सीखी।

ऋग्वैद कालीन समाज में,

जॉत-पॉत व छुआ-छूत नही दिखी।।

--००--

उन दिनों शासन में,

राजा का होता था प्रभाव।

जन के पुरुष मिलकर,

करते थे राजा का चुनाव।।

--००--

युध्द,यज्ञ,समस्या सूनना,

राजा का होता था काज।

पिता के बाद पुत्र को,

नही मिलता था राज।।

--००--

जब पिता के बाद,

पुत्र का क्रम आता।

तब राज्य की व्यवस्था,

वंशानुगत कहलाता।।

--००--

जन की सहमति से,
अगला राजा होता था तय।

राजा लेता था,

सलाह से निर्णय।।

--००--

ऋग्वैदिक काल में राज्य का,

जो स्वरुप सामने आया।

वह राजतंत्र न होकर,
गणतांत्रिक व्यवस्था कहलाया।।

--००--

युध्द का प्रमुख कारण था,

पशुओ पर कब्जा कर लेना।

राजा के पास नही होती थी,

कोई स्थायी सेना।।

--००--

युध्द मे राजा,

नेतृत्व करने जाते।

सभी पुरुष मिलकर,

शत्रु पक्ष को हराते।।

--००--

राजा व जन के सहयोग से

दूर होती थी आपदा।

अपने लोगो में बांटे,

हारे लोग की सम्पदा।।

--००--

लोग राजा को देते थे,

अनाज,आभूषण,गाय।

भेंट से होती थी,

राजा की प्रमुख आय।।

--००--

यज्ञ करना था,

धार्मिक क्रिया का अंग।

दूध,घी,अर्पित किए,

वैदिक सूक्तो के संग।।

--००--

देवी देवताओ को प्रसन्न करने,

विविध यज्ञ कराए।

इन्द्र,अग्नि,वरुण,सोम,

प्रमुख देवता स्थान पाए।।

--००--

ऋग्वैदिक संस्कृति की थी,

तीन बड़ी विशेषताएं।

संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य,

और गणतांत्रिक परम्पराएं।।

--००--

उत्तर वैदिक संस्कृति का विस्तार,

गंगा यमुना के मैदान तक दिखा।

इस काल में आर्यों ने,

यजुर्वेद,सामवेद,व अथर्ववेद लिखा।।

--००--

नए उद्योग-धंधों के साथ,

कृषि क्षेत्र का हुआ फैलाव।

इसका राज्यों का बनने और,

विकास पर पड़ा प्रभाव।।

--००--

जन को अब

जनपद कहा।

कुरु,पांचाल,सूरसेन,

प्रमुख जनपद रहा।।

--००--

खेती करके किसानो ने,

उपजाए कई अन्न।

जिनमें प्रमुख था,

चावल,गेंहूँ,दाल,तिलहन।।

--००--

कृषि की उन्नती के कारण,

व्यवसायो में हुई वृध्दि।

इससे वैदिक समाज में,

आई समृध्दि।।

--००--

कृषि कार्य और औजार में,

लोहे का उपयोग किया।

कृष्ण अयस्क या काला धातु,

इसे नाम दिया।।

--००--

उत्तर वैदिक क्षेत्र की

जब हुई खुदाई ।

मिट्टी व लोहे की चीजें

तब सामने आईं।।

--००--

एक परिवार में,

कई पीढ़ी के लोग आये।

परिवार का यह स्वरुप,

संयुक्त परिवार कहलाए।।

--००--

बुजुर्ग पुरुष की बातें,

सबके व्दारा मानी जातीं।

परिवार का मुखिया,

गृहपति कहलाता।।

--००--

मनुष्य के जीवन की

अवस्थाए भी चार।

ब्रम्ह्,गृह,वान,सन्यास,

वैदिक साहित्य के अनुसार।।

--००--

मनुष्य बाल्यवस्था में जब,

शिक्षा के लिये करता था श्रम।

जीवन की वह अवस्था,

कहलायी ब्रम्हचर्य आश्रम।।

--००--

जब मनुष्य ने विवाह कर,

परिवार बनाया।

जीवन का वह समय,

गृहस्थ आश्रम कहलाया।।

--००--

वानप्रस्थ में मनुष्य,

परिवार से दूर रहता।

जाकर जंगल में,

चिंतन मनन करता ।।

--००--

घर परिवार से दूर रहना,

सन्यास आश्रम की थी रीत।

तीर्थ यात्रा में होता था,

जीवन का अंतिम समय व्यतीत।।

--००--

उत्तर वैदिक काल में गृहपति,

वैश्यों की श्रेणी में आए।

इनकी भैंट से राजा,

राज्य का खर्च चलाए।।

--००--

गृहपतियो की सेवा करने,

सेवक लोग रहे।

जन के मुखिया को राजा,

रिश्तेदार को राजन्य कहें।।

--००--

राजा और राजन्य ने,

बड़े यज्ञों की परम्परा डाली।

इन यज्ञो का लक्ष्य था,

शक्ति और जनपद की खुशहाली।।

--००--

अश्वमेघ और राजसूय

बड़े यज्ञ की श्रेणी में आए।

इन यज्ञो को,

ब्राम्हण या पुरोहित सम्पन्न कराए।।

--००--

ये यज्ञ,

कई महीने चलते थे।

जिस पर राजा,

बहुत धन खर्च करते थे।

--००--

यज्ञो से ब्राम्हण का,

समाज में बढ़ा मान,

धन और गाय,

राजा से पाए दान।।

--००--

उत्तरवैदिक काल में,

सामने आये वर्ण चार।

कर्म था जिसका,

मुख्य आधार।।

--००--

पहला वर्ण,

ब्राम्हण कहलाए।

वेद पढ़ कर,

यज्ञ करवाए।।

--००--

दूसरे वर्ध वाले अपने को,

क्षत्रिय कहते थे।

जनपद की रक्षा करने,

सदैव तत्पर रहते थे।।

--००--

तीसरा वर्ण,

वैश्य कहलाए।

जनपद के भीतर,

पशुपालन व खेती करवाए।।

--००--

आर्यो की दृष्टि में,

जो थे अनार्य।

चौथे वर्ण में शामिल हो,

शूद्र बन किए सेवा कार्य।।

--००--

लोग कर्म करते थे,

वर्ण व्यवस्था के अनुसार।

जो आगे बना,

जाति व्यवस्था का आधार।।

--००--

महाकाव्य से जानते हैं,

वैदिक काल का इतिहास।

वाल्मीकि ने लिखा रामायण,

महाभारत महर्षि व्यास ।।

--००--

रामायण में वर्णित है,

कोसल जनपद का हाल।

महाभारत में वर्णित हैं,

सूरसेन,कुरु और पांचाल।।

--००--

महाकाव्य हैं,

भारतीय संस्कृति का आधार,

जिनमें लिखा है।

मानव जीवन का सार।।

--००--

**<u>महाजनपद काल (600 से 326 ई0पू0)</u>**

अब हम करेंगें,

600 ई0पू0 की बात।

जब भारत में हुई,

नए धार्मिक विचारों की शुरुआत।।

--००--

राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में,

आया महत्वपूर्ण बदलाव।

खेती,व्यापार,नगर विकास,

पर पड़ा इसका प्रभाव।।

--००--

राज्य और गणराज्य बनें,

600ई0पू0 के आसपास।

तेजी से होने लगा,

अब जनपदो का विकास।।

--००--

उपजाउ मिट्टी के कारण,

माना गया वरदान।

अच्छी खेती के लिये,

गंगा यमुना का मैदान।।

--००--

खेती से क्षेत्र में,

आई समृध्दि।

जिससे जनपदो की,

शक्ति में हुई वृध्दि।।

--००--

झारखण्ड के लोहे से बने,

औजार और हथियार।

ताकत और आय बढ़ाने,

जनपदो पे किया अधिकार।।

--००--

शक्तिशाली जनपदो ने,

छोटे जनपदो को जीत लिया।

बड़े जनपदो को,

महाजनपद का नाम दिया।।

--००--

जनपद और महाजनपद में,

राजतंत्र और गणतंत्र की थी प्रणाली।।

उन दिनों भारत में,

16 महाजनपद थे अतिप्रभावशाली।।

--००--

अंग,काशी,कोसल,मगध में,

राजा राज्य करता।

राजा की मृत्यु पर,

बेटा ही राजा बनता।।

--००--

वज्जी,शाक्य,मल्ल में,

एक वंश के लोगो ने शासन किया।

शासक चुनने की व्यवस्था को,

गणतांत्रिक प्रशासन का नाम दिया।।

--००--

मगध जैसे राज्यों ने,

किया साम्राज्य विस्तार।

गणराज्यों को अंत कर,

जमाया अपना अधिकार।।

--००--

इस समय को इतिहासकारों ने,

महाजनपद काल कहा।

उसके अन्तर्गत,

544 से 323 ई0पू0 का समय रहा।।

--००--

अनेक जनपदो के पराजय से,

मगध साम्राज्य का हुआ उत्थान।

कृषि उपज व प्राकृतिक सम्पदा ने,

दी उसे नई पहचान।।

--००--

मगध का पहला,

प्रमुख राजा था बिंबिसार।

जिसने आरंभ किया,

मगध राज्य विस्तार।।

--००--

साम्राज्य विस्तार के लिए,

सैनिक व वैवाहिक नीति को अपनाया।

कोसल, वैशाली व अंग पर,

अपना अधिकार जमाया।।

--००--

साम्राज्य को सुरक्षित रखने,

राजगृह को राजधानी बनाया।

किसानो और व्यापारियों पर,

नियमित कर लगाया।।

--००--

योग्य शासक के रुप में,

बिंबिंसार किया जाता है याद।

अजातशत्रु राजा बना,

पिता की हत्या करने के बाद।।

--००--

राजा बनने पर अजातशत्रु ने,

पिता की नीति को अपनाया।

वज्जि गणतंत्र में फूट डालकर,

साम्राज्य का अंग बनाया।।

--००--

अपनी नीतियो से,

अजातशत्रु ने प्रसिध्दि पाई।

राजगृह के निकट सप्तपर्णी में,

प्रथम बौध्द सम्मेलन कराई ।।

--००--

अजातशत्रु के बाद भी,

साम्राज्य नही हुआ मंद।

नंद वंश का अंतिम,

राजा हुआ घनानंद।।

--००--

नंद शासको ने भी,

साम्राज्य का किया प्रसार।

कर वसूली मे प्रजा पर,

करते थे बहुत अत्याचार।।

--००--

घनानंद के अत्याचार से,

काफी दुःखी थी प्रजा।

नंद वंश को खतम कर,

देना चाहती थी सजा।।

--००--

नंद वंश का अंत करने,

आवश्यक था शौर्य।

चाणक्य की सहायता से,

पराक्रम दिखाया चन्द्रगुप्त मौर्य ।।

--००--

अगले अध्याय में,

चन्द्रगुप्त मौर्य की करेंगें बात।

जिससे हुई मगध में,

मौर्य वंश की शुरुआत।।

--००--

शासन व न्याय में,

राजा सर्वोपरी रहता ।

अपनी सहायता के लिए,

मंत्री व सेनापति नियुक्त करता।।

--००--

गांव के लोग करते थे,

खेती एवं पशुपालन।

कई प्रसिध्द नगर बसे,

उद्योंग धंधो के कारण।।

--००--

नगरों में प्रसिध्द थे,

उज्जैन,चम्पा,राजगृह व वैशाली।

यहॉ के व्यापारी थे,

अति समृध्दिशाली ।।

--००--

व्यापारियों की शक्ति का,

श्रेणी था आधार।

2 श्रेणियों में संगठित होकर,

करते थे व्यापार।।

--००--

व्यापारी व कारीगरो ने,

अपना जो समूह बनाया।

वही समूह,

श्रेणी कहलाया।।

--००--

वस्तु के बदले वस्तु का,

इस काल में हुआ पतन।

धातु के सिक्कों का,

अब शुरु हुआ चलन।।

--००--

सिक्के धातु के टुकड़ो पर,

ठप्पा लगाकर बनाए जाते।

चांदी व तांबा के सिक्के,

आहत सिक्के कहलाते।।

--००--

सिक्को के चलन से,

व्यापार हुआ आसान।

व्यापारियों ने किया,

अब दूर-दूर तक प्रस्थान।।

--००--

किसान,व्यापारी,शिल्पकार,

सभी लोग कर देते।

राजा यह कर,

वस्तु और नगद रुप में लेते।।

--००--

पूरे उत्तर भारत मे,

फैला था मगध साम्राज्य।

लेकिन पंजाब में थे,

कई छोटे राज्य ।।

--००--

छोटे छोटे राज्यो को जीतने,

विदेशियो ने किया आक्रमण।

जिनमे प्रमुख थे,

ईरान व यूनान।।

--००--

अपने अधिकार में लेने,

सारा जहॉन।

यूनान से निकला,

सिकन्दर महान।।

--००--

326 ई0 पू0 में,

पंजाब पर आक्रमण किया।

राजा पोरस ने,

सिकंदर को टक्कर दिया।।

--००--

सिकंदर और पोरस के बीच,

हुई जो लड़ाई।

इतिहास में उसने,

बहुत प्रसिध्द पाई ।।

--००--

सिकंदर और पोरस के युध्द में,

पोरस हुआ पराजित।

सिकंदर ने पोरस को,

नही किया अपमानित।।

--००--

युध्द बंदी पोरस से,

सिकंदर ने पूछी यह बात।

कैसा व्यवहार किया जाए,

अब आपके साथ।।

--००--

निर्भीक होकर पोरस ने,

सिकंदर से की कही मन की बात।

राजा को राजा से करना चाहिए,

वही करो मेरे साथ।।

--००--

पोरस के जवाब ने,

सिकंदर को प्रभावित किया,

पोरस को मित्र बनाकर,

जीता राज्य लौटा दिया।।

--००--

सिकंदर ने आना चाहा,

जब पंजाब के इस पार।

सेना ने किया तब,

आगे बढ़ने से इंकार।।

--००--

सिकंदर ने सेना की,

बातो का रखा मान।

विवश होकर किया,

अपने देश की ओर प्रस्थान ।।

--००--

सिकंदर के आक्रमण से,

भारत हुआ प्रभावित।

भारत और यूनान के बीच,

नया संबंध हुआ स्थापित।।

--००--

संबंध बनने से,

भारतीय जाने लगे यूनान।

दोनो के बीच शुरु हुआ,

विचारो का आदान प्रदान।।

--००--

उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में,

विदेशी बस्तियां सामने आई।

जिसने आगे चलकर,

महत्वपूर्ण भूमिका पाई ।।

--००--

## नवीन धार्मिक विचारों का उदय

पहले की तरह नही रहा,

अब धर्म वैदिक ।

समय के साथ आती गईं,

इसमें बुराईयां अधिक ।।

--००--

पहले वैदिक धर्म का,

स्वरुप था सीधा-सादा।

अब होने लगा,

इसमें कार्य काण्ड ज्यादा।।

--००--

पहले सभी कार्यो को,

लोग करते थे सहर्ष।

वर्णो में भेद भाव से,

अब होने लगा संघर्ष।।

--००--

राजाओं के आपसी युध्द,

व शोषण के कारण।

सुधारवादी विचारों का,

बनने लगा वातावरण।।

--००--

सबसे पहले बौध्दिक धर्म के,

कुछ मुद्दो पर हुआ विचार।

कठिन कर्मकाण्डो में,

किए गए नवीन सुधार।।

--००--

जिन प्रश्नों से आम आदमी,

जूझते थे रोजाना।

वैदिक धर्म का लक्ष्य बना,

उनका समाधान पाना।।

--००--

मोक्ष और आत्मा,

होती है क्या?

आम आदमी की थी,

यही मुख्य समस्या।।

--००--

आत्मा और मोक्ष पर,

नया विचार आया।

विचारों का यह संकलन,

उपनिषद कहलाया।।

--००--

आडम्बर विरोधी धर्मो की,

अब हुई शुरुआत।

इनमें जैन व बौध्द धर्म की,

करेंगें विस्तार से बात।।

--००--

कुछ महापुरुष धर्म से,

दूर करना चाहते थे आडम्बर।

जैन धर्म के ये महापुरुष,

कहलाए तीर्थकर।।

--००--

ऐसे ही महापुरुष जन्मे,

540 ई0पू0 में वैशाली के तीर।

पिता सिध्दार्थ,माता तृसला,

नाम था स्वामी महावीर।।

--००--

स्वामी महावीर को,

बचपन में कहते थे वर्धमान।

12 वर्ष की तपस्या से,

पाया कैवल्य अर्थात सच्चा ज्ञान।।

--००--

कठोर तपस्या,

प्रवृत्ति में धीर।

इन गुणों से,

कहलाए महावीर।।

--००--

इंद्रियों को जीतकर,

जिन भी कहलाया।

इनकी शिक्षा,

जैन धर्म के रुप आया।।

--००--

अपनी शिक्षाओ से,

महावीर ने पाया मान।

72 की उम्र में,

पावापुरी में मिला निर्वाण।।

--००--

निर्वाण प्राप्ति के लिए,

आवश्यक था प्रयत्न।

जैन धर्म में इन्हें,

कहा गया त्रिरत्न।।

--००--

त्रिरत्न के पालन से,

सच्चे कार्यो में होते हैं रत।

त्रिरत्न पालन के लिए,

जरुरी हैं पंच महाव्रत।।

--००--

सम्यकज्ञान, दर्शन व चरित्र,

हैं तीन रत्नों के नाम।

इनके पालन से होता हैं,

निर्वाण पाने का काम।।

--००--

निर्वाण का अर्थ है,

जन्म एवं मृत्यु से मुक्ति,

सच्चे सुख की था,

यह एक सहज युक्ति।।

--००--

सत्य,अहिंसा,अपरिग्रह,

ब्रम्हचर्य और आस्तेय।

ये पॉच थे,

पंचमहाव्रत के ध्येय।।

--००--

निर्वाण से होती है,

जीवन में आवागमन की समाप्ति।

पंचमहाव्रत के पालन से,

होती है त्रित्नों की प्राप्ति।।

--००--

महावीर स्वामी ने,

कठोर वचन को हिंसा माना।

अपने सिध्दांतो में,

मनुष्यों को समरुप जाना।।

--००--

व्यापारी व शासक के संरक्षण से,

इस धर्म का हुआ प्रसार।।

भारत में दूर-दूर तक,

जैन धर्म का हुआ प्रचार।।

--००--

छत्तीसगढ़ में प्रचीन काल से,

इस धर्म का है प्रभाव।

तीर्थ रुप में प्रसिध्द हैं,

आरंग और नगपुरा गांव।।

--००--

नगपुरा के मंदिर में हैं,

23वें तीर्थकार पार्श्वनाथ।

पूरे भारत से आते हैं,

यहॉ श्रध्दालु दर्शनार्थ।।

--००--

नगपुरा में जैनियों ने,

जो मंदिर बनाया।

वह मंदिर,

उवसंग्हर पार्श्वनार्थ तीर्थ कहलाया।।

--००--

महावीर से ज्यादा जिसने,

लोगों को प्रभावित किया।

563ई0पू0 में,

उस बालक ने जन्म लिया।।

--००--

महत्वपूर्ण घटना थी,

इस बालक का दुनिया में आना।

आगे चलकर की जिसने,

बौध्द धर्म की स्थापना।।

--००--

जन्म से पहले,

भविष्य का संकेत दिया।

कपिल वस्तु के निकट,

लुम्बिनी में जन्म लिया।।

--००--

पिता जिसके शुध्दोधन,

माता थी माया।

बचपन में वह,

सिध्दार्थ कहलाया।।

--००--

पालने वाली मां से,

एक और नाम पाया।

गौतमी प्रजापती से,

गौतम भी कहलाया।।

--००--

बीमार,वृध्द,मृत देखकर,

सिध्दार्थ को हुआ भान।

आगे चलकर होगी,

सबकी दशा इनके समान।।

--००--

इन बातों ने सिध्दार्थ को,

किया काफी परेशान।

सन्यासी को देखकर,

मिला उनको ज्ञान।।

--००--

जीवन क्षण भंगुर है,

अब ऐसा मानकर।

उन्होंने घर छोड़ दिया,

दुनिया को नश्वर जानकर।।

--००--

29 वर्ष की आयु में,

ग्रहण किया सन्यास।

कठोर तपस्या से बुझी,

सच्चे ज्ञान की प्यास।।

--००--

सच्चे ज्ञान की खोज ने,

गौतम के ध्यान खींचें।

कठोर तपस्या की,

पीपल पेड़ के नीचे।।

--००--

सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ,

छः वर्षो के बाद।

ज्ञान मिलने पर हुआ,

मोह माया से आजाद।।

--००--

कठोर तपस्या से,

गौतम ने जो ज्ञान पाया।

वह सच्चा ज्ञान,

सम्बोधी कहलाया।।

--००--

ज्ञान पाने के लिये गौतम,

पीपल पेड़ के नीचे रहा।

तभी से लोगो ने,

पीपल को बोंधिवृक्ष कहा।।

--००--

जिस स्थान पर गौतम ने,

सच्चा ज्ञान पाया।

वह स्थान अब,

बोधगया कहलाया।

--००--

सच्चे मन से,

ज्ञान हुआ शुध्द।

अब कहलाया वह,

महात्मा गौतम बुध्द।।

--००--

गौतम बुध्द ने धारण किया,

भिक्षुओ का भेष।

सारनाथ में दिया,

अपना प्रथम उपदेश।।

--००--

सारनाथ में बुध्द ने,

अपने साथियों को दिया ज्ञान।

80वर्ष की आयु में,

कुशीनगर में मिला निर्वाण।

--००--

बौध्द धर्म में,

आर्य सत्य हैं चार।

ये सच्चाईयां हैं,

बौध्द धर्म के आधार।।

--००--

जीवन के सम्बन्ध में,

जो थे बुध्द के कथ्य।

बौध्द धर्म में कहा गया,

उनको चार आर्य सत्य।।

--००--

संसार दुःखमय है,

तृष्णा है इसका कारण।

निर्वाण पा सकते हैं,

अपनाकर सही आचरण।।

--००--

महात्मा बुध्द ने कहा है,

न अधिक तप, न भोग विलास।

जीवन को रखो,

मध्यमार्ग के आस-पास।।

--००--

बौध्द धर्म के अनुसार,

जीवन में है जो कुछ आता जाता।

उससे लगता है

मनुष्य है अपना भाग्य निर्माता।।

--००--

बौध्द धर्म ने,

धार्मिक जटिलता को गलत बताया।

इस कारण इसमें,

जाति-पांति, ऊंच-नीच का भाव नही आया।।

--००--

ईश्वर और आत्मा के संबंध में,

बुध्द ने कुछ नही बतलाया।

इस कारण बौध्द धर्म,

अनीश्वरवादी धर्म कहलाया।।

--००--

धर्म की सार बातें,

सरलता से समझ मे आयें।

इसलिये बुध्द ने अपने विचार,

जन भाषा में ही समझाए।।

--००--

विचारो से प्रभावित लोग

बौध्द संघों में थे सक्रिय।

सादगी एवं सरलता से,

विदेशों में हुए लोक प्रिय।।

--००--

कोरिया,तिब्बत,श्रीलंका,

चीन और जापान।

बौध्द धर्म फैला जहॉ,

ये है महत्वपूर्ण स्थान।।

--००--

बौध्द धर्म की शिक्षा,

जिस रुप में सामने आयी।

तीन ग्रंथो में एकत्रित,

त्रिपिटक कहलायी।।

--००--

छतीसगढ़ में सातवी सदी की,

सामग्री मिलती है भरपूर।

प्रमुख बौध्द केन्द्र था,

दक्षिण कोसल की राजधानी सिरपुर।।

--००--

महावीर और बुध्द के अलावा

कई धार्मिक विचारक आए।

अहिंसा,प्रेम और करुणा को,

सभी धमों का सार बताए।।

--००--

सभी धर्म मूलतः,

अच्छाईयों का देते है ज्ञान।

सभी धर्मो का हो,

आदर और सम्मान।।

--००--

नए धार्मिक विचारो का,

समाज पर पड़ा गहरा प्रभाव।

लोगो ने मन में रखा,

सभी धर्मो के प्रति आदर भाव।।

--००--

**<u>मौर्य वंश और राजा अशोक (322ई0पू0-185 ई0पू0)</u>**

चाणक्य की सहायता से,

चन्द्रगुप्त ने मगध जीता।

वीर और साहसी थे,

बिन्दुसार के पिता।।

--००--

चन्द्र गुप्त से युध्द में,

घनानंद को मिली हार।

सेल्यूकस को भी रोका,

आगे बढ़ने से इस पार।।

--००--

सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त से,

मित्रता कर लिया।

मेगस्थनीज को दूत बनाकर,

उसके पास भेज दिया।।

--००--

चाणक्य को उस समय,

जो कुछ भी दिखा।

अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में,

विस्तार से लिखा।।

--००--

मेगस्थनीज ने भी,

एक पुस्तक लिखी।

जो प्रसिध्द हुई,

नाम से इंडिका।।

--००--

मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय,

सभ्य और निराले थे।

गांव में खेती करते,

घरो में नही लगाते ताले थे।।

--००--

चन्द्रगुप्त के बाद,

बिन्दुसार को मिला राज्य।

दक्षिण के हिस्सो को जीतकर,

फैलाया साम्राज्य।।

--००--

जिसके नाम से मौर्य वंश का,

चंहु ओर बढ़ा मान।

बिन्दुसार का पुत्र वह,

कहलाया अशोक महान।।

--००--

शासन के आरंभ में,

अशोक ने लड़े कई युध्द।

उन युध्दो में है,

नाम बड़ा है कलिंग युध्द।।

--००--

कलिंग के युध्द में,

अशोक ने विजय पाई।

देखकर विध्वंस मन में,

वितृष्णा आई ।।

--००--

मौर्य सेना ने,

लाखो सैनिक मारे।

स्त्री और बच्चे उनके,

हो गए बेसहारे।।

--००--

यह देखकर अशोक का,

द्रवित हुआ हृदय।

कभी युध्द नही करने का,

उसने किया निश्चय।।

--००--

युध्द नही करने का जब,

अशोक ने किया संकल्प,

हथियार के बदले तब,

धम्म बन गया विकल्प।।

--००--

धम्म के रास्ते चलकर,

लोगो की, की भलाई,

धम्म के कारण,

अशोक की हुई बड़ाई।।

--००--

लोक कल्याणार्थ,

चला धम्म के रास्ते,

चट्टानो पर खुदवाया,

इन्हें प्रजा के वास्ते।।

--००--

अशोक के धम्म मे,

नही था कोई देवी देवता।

इसका प्रमुख उद्देश्य था,

लोगो के मध्य एकता।।

--००--

अशोक ने धम्म से,

प्रजा का दिल जीता।

उनसे व्यवहार किया ऐसे,

जैसे संतान के प्रति पिता।।

--००--

झूठ, हिंसा, संघर्ष,

गलत मार्ग का पालन।

दूर हुआ अब,

धम्म के कारण।।

--००--

धम्म के सिध्दांतो का,

अशोक ने कराया प्रचार।

प्रजा को सही राह दिखाने,

धम्म महापात्र को दिया अधिकार।।

--००--

धम्म महापात्र गांव-गांव,

नगर-नगर जाते।

प्रजा को व्यवहार की,

सही और अच्छी बात सिखाते।।

--००--

अशोक ने धम्म की शिक्षा,

स्तंभो और चट्टानों पर खुदवाईं।

दूर-दराज के लोग ने भी,

धम्म की बातें जान पाईं।।

--००--

अहिंसा, बड़ो का आदर,

दान और नम्र व्यवहार।

पालन से इनके,

होता है सबका अधिकार।।

--००--

धम्म ने लोगो में,

अच्छी आदतो की नींव डाली।

संदेशों को प्रचारित करने,

प्रयुक्त की गई भाषा पाली।।

--००--

अशोक का राज्य,

था बहुत विशाल।

चार प्रांतो में बांटा,

करने सही देखभाल।।

--००--

अशोक की राजधानी,

बना पाटिलपुत्र।

शासन में सफलता का,

मंत्रिपरिषद था सूत्र।।

--००--

सहायता के लिए,

कुछ लोगो का दल बनाया।

योग्य लोगो का यह दल,

मंत्रिपरिषद कहलाया।।

--००--

उत्तर में तक्षशिला,

दक्षिण में थी सुवर्णगिरि।

पूर्व में तोसली,

पश्चिम में उज्जैन क्षिप्रा से घिरी।।

--००--

अशोक के आधीन,

थे ये प्रांत चार।

जहॉ की देखभाल,

करते थे राजकुमार।।

--००--

राजकुमारों के सहायतार्थ,

थे अधिकारी और कर्मचारी।

आज्ञा की अवहेलना पर,

देते थे दण्डभारी।।

--००--

कर्मचारी गांवो और शहरो में,

व्यवस्था बनाते।

किसान,कारीगर व व्यापारी से,

लगान वसूल कर लाते।।

--००--

राज्य भर दौरा करने के,

होते थे जो पात्र।

ये बड़े अधिकारी,

कहलाए महामात्र।।

--००--

समय-समय पर अधिकारियो से,

राज्य भर की सूचना पाते।

अधिकारियों पर नजर रखने,

अशोक स्वयं दूर दूर तक जाते।।

--००--

लोगो की भालाई के लिए

सड़क, अस्पताल, धर्मशाला बनवाए।

छाया व फलदार वृक्ष के साथ,

कुंए भी खुदवाए।।

--००--

बौध्द धर्म मानने के बावजूद,

सब धर्मो का सम्मान करता।

सर्व धर्म आदर की बात,

वह प्रजा से भी कहता।।

--००--

आगे बढ़ने में अशोक से,

मदद पाए कलाकार।

सारनाथ स्तंभ सिंह को,

राजकीय चिन्ह बनाया भारत सरकार।।

--००--

अशोक के समय की,

बहुत सी कलाकृति पाते है।

जो आज भी हमें,

अशोक की याद दिलाते हैं।।

--००--

सारनाथ स्तंभ में है,

चक्र,सिंह,बैल और घोड़ा।

भारत सरकार ने इन्हें,

राष्ट्रीय प्रतीको में जोड़ा।।

--००--

बैल को श्रम से,

सिंह को शक्ति से जोड़ा।

उर्जा और गति का,

प्रतीक बन गया घोड़ा।

--००--

कार्य और प्रगति का,

चक्र देता है संदेश।

जिस पर गर्व करता है,

हमारा भारत देश।।

--००--

चक्र के नीचे,

सत्यमेव जयते लिखा।

सारनाथ स्तंभ में,

मौर्यकला की उत्कृष्टता ।।

--००--

सत्यमेव जयते का अर्थ हैं,

सत्य की जय।

झूठ की नही सच की,

होती है सदा विजय।।

--००--

चौबिस तीलियो से बना चक्र,

तिरंगे की बना शान।

राष्ट्रध्व्ज के रुप में,

जो है हमारी पहचान।।

--००--

पचास वर्ष और चला,

अशोक के बाद मौर्य साम्रारज्य।

उनके स्थान पर बने,

अब छोटे-छोटे कई राज्य।।

--००--

**<u>विदेशो से व्यापार और सम्पर्क</u>**

**<u>(ई0 पू0 100 से 300 ई0)</u>**

जो लोग दूसरे देशों से,

चीजे खरीद कर लाते।

मौर्य काल में वे,

श्रेष्ठी,सेट्ठी,या सेठ कहलाते।।

--००--

अपने साथ व्यापारी,

बर्तन,कपड़ा,तांबा ले जाते।

दक्षिणी प्रांतो से,

मोती,सोना चंदन लाते।।

--००--

उन दिनो व्यापारी,

समूह में यात्रा करते।

रात हो जाने पर,

सराय या मठो मे ठहरते।।

--००--

बाजार में सामान बेचकर,

वहॉ से अच्छी चीजे लाते।

जहाजो से समुद्री यात्रा कर,

चीन, अरब, ईराक तक जाते।।

--००--

उन्नत व्यापार से,

श्रेष्ठि बने धनवान।

इन पैसो से वे,

बौध्द मठो को देते दान।।

--००--

मौर्यो के बाद,

शुंग वंश का शासन आया।

दक्षिण में सात वाहनों ने,

अपना राज्य बनाया।।

--००--

उत्तर पश्चिम में वे राज्य बनाए,

जिनका देश था यूनान।

इनमें सबसे प्रमुख रहे,

शक और कुषाण।।

--००--

कुषाण राजा कनिष्क ने,

बहुत नाम कमाया।

मध्य एशिया से लेकर,

मथुरा तक अधिकार जमाया।।

--००--

मध्य एशिया के राजाओ का,

राज्य था बहुत विशाल।

भारत से उज्बेकिस्तान तक,

बन गया व्यापारिक जाल।।

--००--

भारतीय व्यापारी इन देशों से,

बेरोक टोक वस्तु लिए और दिए।

भिक्षुओ और श्रमणो ने भी,

वहॉ मठ स्थापित किये।।

--००--

चीन से भूमध्य सागर तक,

जो मार्ग जाता।

रेशम के व्यापार से,

रेशमी मार्ग कहलाता।।

--००--

भारतीय व्यापारी समुद्र से,

ले जाते थे सामान।

मिस्र के सिकंदरिया से,

पहुंचे रोम और यूनान।।

--००--

हमारे देश में तरह तरह के,

होते थे मसाले।

जिन्हें करते थे,

पसंद यूरोप वाले।।

--००--

इसके अतिरिक्त,

यूरोपीय देशो के अंदर।

भेजे जाते थे,

हाथी, मोर, और बंदर।।

--००--

व्यापारियों के पक्ष में रहा,

कपड़ा, चंदन, कीमती पत्थर का होना।

इन चीजों के बदले मंगाए,

यूरोपीय देशो से मूंगा और सोना।।

--००--

यूनान, ईरान, मध्य एशिया ने,

भारत में राज्य बनाया।

उसी तरह भारतीयों ने,

दक्षिण पूर्व एशिया में राज्य बसाया।।

--००--

दूसरे देशो के लोगो से,

भारत का हुआ सम्पर्क।

कम हुआ इससे,

सोच विचारो का फर्क।।

--००--

एक दूसरे के देशों में,

जब राज्य किए स्थापित।

व्यापार, विचार, धर्म

रहन, सहन हुआ प्रभावित।।

--००--

उन्नत व्यापार से,

बढ़ा व्यापारियो का मान।

सोने चांदी ने लिया,

अब आहत सिक्के का स्थान।।

--००--

मौर्यकालीन राजाओ के सिक्के,

धातु पर ठप्पे से बनते।

हिन्द यूनानी राजाओ के,

सिक्के सांचो में ढलते।।

--००--

यूनानी शासको ने सिक्के पर,

तस्वीर और नाम लिखा।

इस परिपाटी का प्रभाव,

भारतीय राजाओ में भी दिखा।।

--००--

मूर्तिकला से जुड़े हैं,

जिस जगह के तार।

उत्तर पश्चिम में है,

प्रस्ध्दि स्थल गांधार।।

--००--

भारतीय और यूनानी आकृष्ट हुए,

एक दूसरे की कलाओ की ओर।

गांधार मूर्तिकला में दिए,

चुन्नटो की बनावट पर जोर।।

--००--

मथुरा मूर्तिकला में दिखा,

शारीरिक शक्ति का दम।

गांधार कला के विपरित,

चुन्नटो पर था जोर कम।।

--००--

भारतीय और यूनानी जब,

एक दूसरे के सम्पर्क में आए।

गांधार और मथुरा शैली में,

बुध्द व महावीर की मूर्ती बनाए।।

--००--

दिन व बारह राशियों की बात,

हमने यूनानियो से पाया।

शून्य व दशमलव चिन्ह,

यूनानियों ने हमसे अपनाया।।

--००—

रोम और यूनान से,

वृहत सम्पर्क के बाद।

कई यूनानी ग्रंथो का,

संस्कृत में हुआ अनुवाद।।

--००--

यूनानी यात्री यहॉ रहकर,

करते थे चिंतन मनन।

जिससे प्रभावित हुआ,

धर्म और दर्शन।।

--००—

दक्षिण पूर्व एशियाई देशो में,

हुआ भव्य मंदिर का निर्माण।

अंकोरवाट मंदिर के लिए प्रसिध्द,

कम्बोडिया है वह स्थान।।

--००--

जावा के बोरोबुदुर में,

बौध्द रहे सक्रिय।

इण्डोनेशिया में रामायण की,

कथा हुई लोकप्रिय।।

--००—

रामायण के प्रमुख पात्र हैं,

राम और सीता।

प्रमुख चिकित्सा ग्रंथ हैं,

चरक और सुश्रुत संहिता।।

--००--

**<u>गुप्तकाल(300ई0 से 500ई0)</u>**

इस पाठ में हम जानेंगें,

300 से 500 ई का हाल।

ईतिहास में कहा गया,

जिसे गुप्त काल।।

--००--

इस समय मगध में,

गुप्तवंश का रहा राजपाट।

सम्राज्य का विस्तार हुआ,

समुद्र गुप्त बना जब सम्राट।।

--००--

समुद्रगुप्त ने चाहा,

उनका राज्य हो बड़ा।

दूसरे राज्यों पर अधिकार करने,

कई राजाओ से युध्द लड़ा।

--००—

इलाहाबाद शिलालेख के अनुसार,

आर्यवर्त व आटविक को जीत लिया।

दक्षिणपथ जीतकर,

राजाओ को वापस कर दिया।।

--००--

समुद्रगुप्त ने छत्तीसगढ़ के,

दो राजाओ को हराया।

प्रथम की राजधानी सिरपुर,

व्दितीय की महाकांतर को बनाया।।

--००—

समुदगुप्त के समय के,

सोने के सिक्के मिलते हैं।

सिक्को में वह,

वीणा बजाते हुए दिखते है।।

--००--

समुद्रगुप्त का लेख मिला,

वह स्थान है इलाहाबाद।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य,

राजा बना निर्बाध।।

--००—

चन्द्रगुप्त ने उत्तरभारत में,

राज्य का किया विस्तार।

बंगाल से गुजरात तक,

उनका रहा अधिकार।।

--००--

गुप्तों के समय प्रांत,

भूक्ति भी कहलाते थे।

प्रांत या भूक्ति,

जिलों में बांटे जाते थे।।

--००—

प्रांत या भूक्ति पर,

स्थानीय लोगो का था शासन।

केवल महत्वपूर्ण बातो पर,

आज्ञा देते थे राजन्।।

--००--

गांव का प्रसाशन,

लोगों की सभा ने सम्भाला।

स्थानीय लोगो की भूमिका ने,

विकेन्द्रीकरण की नींव को डाला।।

--००—

इस काल में लोगो के,

जीवन में आया बदलाव।

विज्ञान, कला और धर्म पर,

दिखा जिसका प्रभाव।।

--००--

गुप्तकालीन शासको ने,

कई शिलालेख खुदवाए।

जिनको पढ़कर हम,

बहुत कुछ जान पाए।।

--००--

बहुत से विदेशी जो करते थे,

बौध्द धर्म का सम्मान।

वे देखने भारत आए,

बुध्द से संबंधित स्थान।।

--००--

ऐसा ही एक विदेशी,

जो था बड़ा विव्दान।

चीन से आया,

नाम था फाह्यान।।

--००—

फाह्यान को भारत में,

जो कुछ भी दिखा।

यात्रा अनुभव का विवरण,

उसने अपनी पुस्तक में लिखा।।

--००--

फाह्यान के अनुसार लोग,

शराब नही पीते थे।

सुखी और समृध्द,

जीवन जीते थे।।

--००—

प्याज और लहसून,

केवल चांडाल खाते।

बिना रोक टोक,

कहीं भी आते जाते।।

--००--

लोगो को अधिक नही,

देना पड़ता था लगान।

बौध्द मठो को किए,

घर, बगीचे व खेत दान।।

--००—

खेतीहान जमीन भी,

किए गए दाम।

इससे बढ़ा,

बौध्द मठो का सम्मान।।

--००--

बड़े-बड़े यज्ञों का,

करते थे आयोजन।

लोगो को पंसद था,

शाकाहारी भोजन।।

--००—

कर्मकाण्ड का आधार बनी,

अच्छे जीवन की आस।

लोगो ने किया,

अहिंसा पर विश्वास।।

--००--

फाह्यान के कुछ कथन,

नही हैं पूरे सही।

उनके विश्लेषण में,

कुछ कमियां रहीं।।

--००--

कुछ अन्य ग्रंथ कुप्रथाओ के,

संबंध में बतलाते हैं।

जिनमें मुख्य रुप से,

जाति प्रथा और छुआ छूत आते हैं।।

--००--

शहरी उच्च वर्ग के लोग,

सुसंस्कृत जीवन बिताए।

साहित्य और कला में,

विशेष रुचि दिखलाए।।

--००--

अपने घर की महिलाओं पर,

तरह तरह की रोक लगाए।

सती प्रथा के नाम पर,

पति के साथ जलाए।।

--००--

व्यापार के कमी से,

कठिन हुआ धंधा करना आगे।

लोग शहर छोड़कर,

अब गांवो की ओर भागे।।

--००—

राजा से दान पाने वाले,

किसानो से खेती कराए।

खेती से प्राप्त धन से,

अपना खर्च चलाए।।

--००--

व्यापार में कमी से,

काम का हुआ अभाव।

शहरो की स्थिति पर,

पड़ा विपरित प्रभ़ाव।।

--००—

वैदिकधर्म ने बौध्द व जैनों की,

कई बातो को अपनाया।

जिससे गुप्तकाल के,

धार्मिक विचारों में परिवर्तन आया।।

--००--

वैदिक धर्म ने कम किया,

बड़े यज्ञो को करना।

मंदिर बनाकर आरंभ की,

देवी देवताओ की पूजा अर्चना।।

--००—

खर्चीले रिवाजो की जगह,

सरल विधि प्रचलन में आए।

पूजा, व्रत, दान, मे

गरीब लोग भी अवसर पाए।।

--००--

इन्द्र, अग्नि, वरुण की जगह,

शिव, विष्णु बने प्रमुख देवता।

गुप्तकाल में मान्य रही,

लोगो की धार्मिक स्वतंत्रता।।

--००—

लोगो ने चुना स्वयं,

अपना धर्म और कर्म।

गुप्त राजाओ ने माना,

स्वयं वैष्णव धर्म।।

--००--

आर्यभट्ट थे प्रमुख,

खगोल और गणित के विव्दान।

आर्यभट्टीयम में बतलाया,

जटिल गणीतीय सवालो का निदान।।

--००—

सूर्य, चंद्र को राहू-केतु,

कर लेते है मुंह में धारण।

पहले के लोग मानते थे,

इसे ग्रहण होने का कारण ।।

--००--

सर्वप्रथम आर्यभट्ट ने,

यह तथ्य सामने लाया।

ग्रहण होने का कारण है,

पृथ्वी और चंद्रमा की छाया।।

--००—

आर्यभट्ट के बतलाने से,

लोगों ने यह जाना।

पृथ्वी और चंद्रमा की छाया को,

ग्रहण होने का कारण माना।।

--००--

पृथ्वी के संबंध में,

जो कहता है आधुनिक विज्ञान।

उसने सही सिध्द किया,

आर्यभट्ट का अनुमान।।

--००--

गुप्तकाल में साहित्य रचना की,

संस्कृत भाषा बनी आधार।

नौ रत्नो के लिए प्रसिध्द हुआ,

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबार।।

--००--

कालिदास, माध

शूद्रक और भारवि।

गुप्तकाल में हुए,

प्रमुख संस्कृत कवि।।

--००--

विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र से,

राजकुमारो को दिया ज्ञान विशेष।

नारायण पंडित ने लिखी,

इसी काल में हितोपदेश।।

--००--

मेघदूत, कुमारसम्भव हैं,

कालिदास की काव्य रचनाएं।

जिनमे अभिव्यक्त हुईं,

मनुष्य की भावनाएं।।

--००--

पंचतंत्र में हैं,

जीवन संबध्द कहानी।

अभिज्ञान शाकुन्तलम है,

नाटक जानी मानी।।

--००--

अभिज्ञान शाकुन्तलम का विषय,

केन्दित रहा शकुन्तला दुष्यंत के आस पास।

विश्व प्रसिध्द इस नाटक को,

रचने वाला था कालिदास।।

--००--

बुध्दकाल के चित्रो में,

बुध्द के चित्र हैं अनुपम।

गुफाओं की दीवारो पर बने,

अजन्ता का उदाहरण है सर्वोत्तम।।

--००--

अजन्ता चित्र के विषय,

महात्मा बुध्द के जीवन से लिए।

कुशलता से उकेर कर,

चित्रो को सजीव रुप दिए।।

--००--

गुफा, चैत्य, बिहार स्तूप हैं,

बौध्द धर्म के विकास का प्रमाण।

विष्णु, शिव की मूर्तियों का भी,

बड़ी संख्या में हुआ निर्माण।।

--००--

इस समय की मूर्तियो की,

रही यह खास बात।

मूर्तियों में भावनाओ को,

अभिव्यक्त करने की हुई शुरुआत।।

--००--

बड़ी संख्या में बनाए गए,

मंदिर, चैत्य, विहार व स्तूप।

पहाड़ियो को काटकर दिए,

प्रसिध्द गुफाओ का रुप।।

--००--

सारनाथ में बनाए,

विशाल बौध्द विहार।

देवगढ़ में स्थित है,

मंदिर दशावतार।।

--००—

विदिशा में स्थिति हैं,

उदयगिरि की गुफाएं।

ईंटों से विष्णु मंदिर,

भीतर गांव में बनाए।।

--००--

छत्तीसगढ़ में मिले हैं,

गुप्तकालीन मंदिर के प्रमाण।

सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर है,

भीतर गांव मंदिर समान।।

--००--

सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर है,

650 ई0 के आस पास का कृत्य।

भीतर गांव की तरह दीवारो पर,

अंकित है पौराणिक दृश्य।।

--००--

शिखर, चौखट,व प्रवेश व्दार में,

दोनों में है समानता।

माघ व बुध्द पूर्णिमा पर,

सिरपुर में मेला लगता।।

--००--

## प्रांतीय राज्यों का युग(500ई0 से 700ई0)

गुप्त वंश के बाद,

छोटे राज्यो का युग आया।

गुप्तो की अधीनता छोड़,

अपना प्रभुत्व बढ़ाया।।

--००—

इस समय के वे राज्य,

जिनका विवरण है सम्मुख।

उनमें वर्धन, चालुक्य,

पल्लव वंश है प्रमुख।।

--००--

दिल्ली के पास थानेश्वर में,

प्रसिध्द राजा हुआ हर्ष।

उत्तर भारत में साम्राज्य बनाने,

कई राजाओ से किया संघर्ष।।

--००—

हर्षवर्धन राजा बना,

606 ई0 के आस पास।

दक्षिणी राज्यो पर भी,

चढ़ाई का किया प्रयास।।

--००--

हर्षवर्धन का अधूरा रहा,

दक्षिण को जीतने का काम।

जिस राजा ने रोका उनको,

पुलकेशिन व्दितीय था नाम।।

--००—

हर्ष ने अपना साम्राज्य,

पंजाब से उड़ीसा तक फैलाया।

आगे चलकर उसने,

कन्नौज को राजधानी बनाया।।

--००--

राज्यों को पराजित कर,

हर्ष ने लगान लिया।

प्रशासनिक कार्यो में,

राज्यों को स्वतंत्र किया।।

--००—

बाणभट्ट था प्रसिध्द,

संस्कृत का विव्दान।

माना गया जिसे,

हर्ष के दरबार की शान।।

--००--

हर्ष की जीवनी का,

नाम है हर्ष चरित ।

जिसे कहा गया।

बाणभट्ट व्दारा रचित ।।

--००--

हर्षचरित मे है।

हर्षवर्धन का विवरण।

ह्वेनसांग ने लिखा,

अपने अनुभव का संस्मरण।।

--००--

चीनी यात्री ह्वेनसांग,

बौध्द धर्म का अध्ययन करने आया।

अपना अनुभव लिख,

उन दिनो के बारे में बतलाया।।

--००--

हर्ष स्वंय था,

संरक्षक और विव्दान।

संस्कृत में नाटक लिखकर,

पाया बहुत सम्मान।।

--००--

हर्षवर्धन के नाटक हैं,

रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद।

जिन्हे पढ़कर लोगों ने,

प्राप्त किया परमानंद।।

--००—

हर्षवर्धन रहा,

शिव का उपासक।।

कन्नौज में बौध्द सभा किया,

बना जब वह शासक।।

--००--

प्रत्येक चौथे वर्ष के,

धर्म सम्मेलन मे लिया भाग।

जहॉ यह सम्मेलन होता,

वह स्थान था प्रयाग।।

--००—

इस सम्मेलन में हर्ष,

गरीब और भिक्षु को देता दान।

उदार दृष्टिकोण ने,

बढ़ाया हर्ष का मान।।

--००--

हर्ष के शासन काल में,

630 ई0 में ह्वेनसांग आया।

बौध्द ग्रंथो के अध्ययन में,

5 वर्ष का समय बिताया।।

--००—

बौध्द शिक्षा के लिये,

नालंदा की थी चर्चा।

100 गांव की आय से,

चलता था इसका खर्चा।।

--००--

अपने देश जाकर,

ह्वेनसांग ने कहा।

भारत में अब बौध्द धर्म,

लोकप्रिय नही रहा।।

--००—

अपनी यात्रा के समय ह्वेनसांग,

छत्तीसगढ़ भी आया।

दक्षिण कोसल के सिरपुर को

बौध्द शिक्षा का केन्द्र बताया।।

--००--

पुलकेशिन व्दितीय ने युध्द में,

हर्षवर्धन को दी टक्कर ।

अपनी यह पराजय,

हर्ष भूला नही जीवन भर।।

--००—

पुलकेशिन व्दितीय ने पल्ल्व,

महेन्द वर्मन को पराजित किया,

बेटे नृसिंह वर्मन ने,

हार का बदला लिया।।

--००--

चालुक्यों ने प्रशासन का,

किया उचित प्रबंध।

विदेशों से बनाए,

व्यापारिक संबंध।।

--००--

कला के संरक्षण में,

चालुक्य शासक आगे आए।

दक्कन की पहाड़ियो में,

गुफा मंदिर बनवाए।।

--००--

राजधानी वातापी नगर,

काफी था समृध्द।

चालुक्य शासन काल में,

अजन्ता,एलोरा,हुआ प्रसिध्द।।

--००—

चालुक्य शासन काल में,

ईरान का राजदूत आया।

अजन्ता के चित्र में,

पुलकेशिन को स्वागत करते दिखाया।।

--००--

पल्लव वंश प्रसिध्द हुआ,

गुफा मंदिरो के कारण।

महाबलिपुरम के मंदिर हैं,

इसके प्रमुख उदाहरण।।

--००—

शिलाओ को जोड़कर बनाए,

कॉची का कैलाश मंदिर।

मंदिरो को दी गई,

बड़ी बड़ी जागीर।।

--००--

लोगो के अनुसार धर्म था,

ईश्वर की व्यक्तिगत उपासना,

इस विचारधारा से आगे,

भक्ति की हुई स्थापना।।

--००—

आरंभ में भक्ति में

सामान्य वर्ग के लोग आए।

शिव व विष्णु के भजन,

घूम घूम के गाए।।

--००--

विष्णु के उपासक,

कहलाए अलवार।

वहीं शिव भक्त,

कहे गए नायनार।।

--००—

भक्ति के सरल रुप से,

आर्कषित हुआ जन साधारण।

आलवार व नायनार संत,

सफल हुए तमिल भाषा के कारण।।

--००--

पूजा के अतिरिक्त मंदिर,

शिक्षा, विचार, उत्सव का बना स्थान।

पल्लवों के अधीन विकास मे,

भूमिका रही महान।।

--००—

पल्ल्व महेन्द्र वर्मन था,

हर्ष पुलकेशिन के समकालीन।

चट्टान खोदकर मंदिर की प्रथा

विकसित हुई पल्लवो के अधीन।।

--००--